भिक्खु डॉ. करुणाशील राहुल

"यह किताब उन सभी महिलाओं को समर्पित है जिन्होंने ज्ञान का उपयोग अपनी मुक्ति के लिए किया और जो स्वयं मुक्त हुई और दूसरों को भी मुक्ति की राह दी"

अन्य रचनाएं

1 वो ग्याराह दिन
2 रठपाल की पब्बज्जा
3 बुद्ध के प्रेरक प्रसंग
4 सोनबा का त्याग
5 रमा अम्बेडकर
6 सावित्री बाई फुले
7 जंगल की आग
8 बौद्ध संखार
9 मेरी मजबूत पकड़
10 शील जीवन का आधार
11 घूँघट इज्जत नहीं गुलामी
12 बुद्ध की महाउपासिका - विसाखा
13 मन चंगा तो कठौती में गंगा
14 तोड़ो परम्पराएं श्रेष्ठ जीवन के लिए
15 दो पैर दो पहियो का उपयोग
16 तुम्हें जाना कहां था कहां पहुंच गई
17 साहब कांशीराम के सांस्कृतिक आंदोलन
18 अपने आदर्शों को आचरण में उतारें

ISBN: 9789395521017
9 789395 521017

एलिफेंटा पब्लिकेशन
महेश हॉस्पिटल अलीगढ़ रोड़, पलवल, हरियाणा - 121102
संपर्क : 8396972664

तुम्हें जाना कहाँ था कहाँ पहुँच गई?

भिक्खु डॉ. करुणाशील राहुल

बौद्धमय भारत श्रृंखला-3

तुम्हें जाना कहां था कहां पहुंच गई?

लेखक

भन्ते डॉ. करुणाशील राहुल

एलिफेंटा पब्लिकेशन

प्रथम संस्करण : 2022 (बुद्धाब्द 2567)

सहयोग राशि : 30 रुपये

रचना : तुम्हें जाना कहां था कहां पहुंच गईं ?
लेखक : भन्ते करूणाशील राहुल
आवरण : दीक्षा राहुल

एलिफेंटा पब्लिकेशन
महेश हॉस्पीटल अलीगढ़ रोड़, पलवल हरियाणा (121102)
सम्पर्क सूत्रः- 8396972664
E-mail: elephantapublications@gmail.com

समर्पण

"उन सभी
महिलाओं को जिन्होंने
ज्ञान का उपयोग अपनी मुक्ति
के लिए किया जो स्वयं मुक्त हुई
और दूसरों को भी मुक्ति की राह दी"

तुम्हें जाना कहां था कहां पहुंच गई?

बेटी आज तुम आई हो पुष्प चढ़ाने। तुम्हें अपने पास पाकर मेरा सीना गर्व से चौड़ा हो गया है। तुम्हारे नाम के आगे लगे योग्यता के प्रतीक(डॉ., प्रोफेसर, एडवोकेट) तुम्हें भी बड़ा होने का एहसास दे रहे हैं। अपनी योग्यता से तुम भी अपने आप को आज पुरुषों के बराबर समझने लगी हो। तुम्हारी उपलब्धियों से मुझे संतोष मिला है। जैसा मैं सोचता था वैसा तुम बन पा रही हो। पहले तुम घर तक सीमित रहती थी, परिवार की देखभाल ही करती थी, अब घर से बाहर के काम भी करती हो।

धन कमाने के लिए नौकरी भी करती हो। अब तो तुम्हारे कंधों पर दोहरा बोझ आ पड़ा है। घर भी संभालो और दफ्तर भी। ज्ञान प्राप्ति के बाद बोझ कम होना चाहिए था लेकिन तुम्हारा बोझ बढ़ गया है। ऐसा मैंने नहीं सोचा था। जब तुम दफ्तर से घर आती हो काम के बोझ से खीझ उठती हो। दफ्तर का तनाव घर के काम को भारी बना देता है। पति के साथ झगड़ा भी होता है। तुम मुझे कोसती हो, जब अनपढ़ थी केवल घर का ही काम करना पड़ता था, आज दफ्तर संभालो और घर भी।

यह गलती मेरी नहीं है, बेटी यह तुम्हारी समझ का फल है। तुमने ठीक से नहीं समझा, ज्ञान का उपयोग बेड़ियां काटने के लिए किया जाता है। ज्ञान से आदमी अपनी अज्ञानता, अंधविश्वास और जड़ता को तोड़ता है। ज्ञान ही मुक्ति का एकमात्र साधन है। लेकिन तुमने इस मुक्ति के साधन को केवल आजीविका के लिए धन अर्जित करने के साधन के रूप में देखा है। तुमने उस ज्ञान से मुक्ति की सम्भावना को नहीं देखा। इसलिए यह सब भुगतना पड़ रहा है। मैंने तो तुम्हारे जीवन को बड़ी ही बदतर हालत में देखा है।

क्या था तुम्हारे पास? इस देश में महिला भी ब्रह्मा के पैरों से पैदा हुई। ब्राह्मण के घर में वह ब्राह्मणी कहलाई लेकिन महिला होने के कारण शूद्र ही रही। शूद्र और शोषण एक दूसरे के पर्यायवाची शब्द है। तुम महिला के रूप में पैदा हुई हो इसलिए शोषण तो होगा ही, ऐसी मान्यता ने महिलाओं को समर्पित कर दिया शोषण की चक्की में पिसने के लिए। मैंने देखा है उस दौर को, कोई नहीं सुनता था।

जब कोई पुरुष मरता था, तब उसी के साथ तुम्हें भी जलाया जाता

था। तुम चीखती थी.... चिल्लाती थी..... जलकर नहीं मरना चाहती थी, लेकिन असहाय बनकर रह जाती थी। शरीर के किसी अंग पर एक चिंगारी पड़ जाए तो हम चिल्ला उठते हैं। तुम्हारा तो पूरा शरीर जलता था। तुम चिल्लाती थी, बचकर भागना भी चाहती थी, लेकिन स्वयं को बचा नहीं सकती थी। तमाम औरतें गीत गा-गा करके तुम्हें प्रेरित करती थी, जलकर मरने के लिए। ढ़ोल और नगाड़े बजते थे, उनकी तेज आवाज में तुम्हारी चीख दबकर रह जाती थी। तुम चिल्लाती रहती थी- ढोल नगाड़े बजते रहते थे, फिर कहा जाता, तुम सती हो गई हो। जलकर मरने के दर्द का अहसास किसी को बता भी नहीं सकती थी, सती होने का गौरव पा जाती थी। फिर तुम्हीं ने पूजा है उस सती को जिसे जबरन धर्म के नाम पर जिन्दा जलाया। तुम्हारी इस नासमझी ने अन्य औरतों को मरने के लिए मजबूर किया। लाखों बेगुनाह मर चुकी हैं इस पाखण्डवाद की बली पर। परंतु मैंने अब इसे इतिहास के काले पन्नों में दफन कर दिया है। अब न कोई सती होती है और न कोई सती कर सकता है। मेरे द्वारा लिखा हुआ कानून तुम्हारी सुरक्षा का कवच है। लेकिन तुमने उसे समझा नहीं। तुम्हारे साथ अतीत में क्या-क्या घटा देखकर सिहरन सी पैदा होती है। मैं तड़प उठता हूं, जब मैं तुम्हारे अतीत को देखता हूं। लेकिन तुम्हें क्या? तुमने तो पढ़ना ही बंद कर दिया। पढ़ाई का मतलब केवल परीक्षा पास करने से ही रह गया। काश तुम ठीक से पढ़ना सीख जाती तो जीवन की परीक्षा में भी पास हो जाती। तुमने नहीं पढ़ा लेकिन मैंने तो पढ़ा है। मैं जानता भी हूं और मैंने देखा भी है।

जिन धार्मिक मान्यताओं को तुम जीवन का आधार समझती हो वे ही तुम्हारी बेड़ियां हैं। तुमने युवा अवस्था में शिव का व्रत किया अच्छा पति पाने की चाहत लेकर। अनेकों बार व्रत किये शिव-पार्वती की कहानी भी सुनी। फिर भी न समझ सकी। तुम्हारी शादी हुई, पति शराबी मिला, क्योंकि जब नशा करने वाला तुम्हारा आदर्श है तो पति भी वैसा ही मिलेगा। शराबी मिला, वह तुम्हें पीटता है....., तुम पिटती रहती हो। वह तुम्हें आग में जलाता है, तुम जलकर मर जाती हो। शिव की पत्नी भी जलकर मरी थी। क्या सीखा है तुमने? यह मृत्यु का मार्ग था। तुम उसी मार्ग पर चली हो इसलिए प्रतिपल मरती हो। तुम बच सकती हो अच्छे आदर्श को पाकर। बिना प्रयास किए ज्यादा पाना चाहती हो, इसलिए कभी सोमवार, कभी मंगलवार, शनिवार और रविवार का व्रत करती हो। कभी पति की लम्बी उम्र के लिए करवाचौथ का व्रत करती हो तो कभी संतानों की सुरक्षा के लिए शाऊ माता का। कोई भी तो काम नहीं

आता। जब मैं विलायत पढ़ने गया, रमा घर पर रहती थी, वह अकेली थी। वह भी तुम्हारी ही तरह अंधविश्वास का शिकार हो गई, देवी देवताओं में विश्वास करने लगी, अपनी संतानों की लम्बी उम्र के लिए उपवास भी करने लगी, यह उसका भ्रम था। मैं जानता हूं घर में धन की कमी थी, बच्चों को ठीक से भोजन नहीं मिला, कुपोषण की वजह से बीमार हो गए। इलाज के लिए धन नहीं था, एक-एक करके मौत के मुंह में समा गए।

मेरी भी एक बेटी थी। मेरे विदेश जाने के बाद पैदा हुई। रमा ने उसका नाम इंदू रखा। मैंने भी अपनी बेटी के लिए अनेकों कामनाएं की। मैं तो हजारों मील दूर था, मैंने बेटी को देखा भी नहीं था। इसी सामाजिक गैर बराबरी का शिकार इंदू भी बनी। वह बीमार हो गई, इलाज के लिए धन नहीं था, लेकिन रमा को भरोसा था ईश्वर, दैवीय शक्ति पर, उसने भी उपवास रखा। लेकिन बेटी इंदू का जीवन नहीं बचा सकी। 9 माह की अवस्था में ही इंदू इस दुनिया से विदा हो गई। इंदू के अलावा भी रमा की कोख से पैदा हुए गंगाधर, रमेश और राजरतन ने शिशु अवस्था में ही दम तोड़ दिया। जीवन में नीरसता आ गई। इंदू की मौत के बाद रमा ने कोई उपवास नहीं रखा। अज्ञानता का भ्रम और देवताओं के प्रति श्रद्धा खत्म हो गई। भले ही रमा ने अपनी संतानों को खोया किंतु उसमें आत्मविश्वास था। अब वह अज्ञात भय से मुक्त थी। मैंने रमा को अनपढ़ होते हुए भी भ्रम से मुक्त देखा है। लेकिन तुम तो पढ़ी लिखी हो, भ्रम का शिकार होकर भ्रमित रहती हो?

जब मैं भारत का कानून मंत्री बना। वह मेरे जीवन का बहुत महत्वपूर्ण समय था। मुझे अपनी शक्ति में पूरा भरोसा था। देश कानून से चलता है और कानून मुझे बनाना था। मेरी छटपटाहट तुम्हें मुक्त करने की थी।

मेरी आंखों के सामने धर्म के नाम पर तुम्हारे साथ खेला जाने वाला घिनौना खेल था। मैंने देखा कि भूदेव जो स्वयं ईश्वरीय आज्ञा से कानून बनाते थे, बहुत अनैतिक थे। नम्बूदरी ब्राह्मण संबंधम नाम के धार्मिक कानून का हवाला देकर किसी भी शूद्र महिला के साथ विवाह कर लेते थे। यह विवाह भी अजीब था। नंबुदरी ब्राह्मण विवाह करता था लेकिन वह उस महिला का पति नहीं होता था। इस विवाहित महिला की ससुराल भी नहीं होती थी। वह लड़की अपने पिता के घर पर ही रहती थी। रात के अंधेरे में वह नंबूदरी ब्राह्मण आता और उस महिला का शारीरिक शोषण करता। उजाला होने से पहले ही निकल जाता। रात के गहन अंधकार में उसकी अनैतिकता दफन हो जाती। वह महिला

तड़पती रहती, विवाह हुआ, पति नहीं, ससुराल नहीं। संतान भी पैदा होती पर पिता का नाम नहीं। हजारों-हजारों महिलाओं का जीवन कुर्बान हो गया संबंधम नाम के ब्राह्मण के साथ हुए विवाह के नाम पर। मुझे बड़ा असहनीय लगता था।

जब किसी धर्म के ठेकेदार भूदेव की कुदृष्टि शूद्र के घर में पैदा हुई बच्ची पर पड़ती तो वह प्रपंच करता। गांव में अकाल पड़ने वाला है, महामारी फैलने वाली है, बाढ़ आने वाली है, देवता कुपित हो रहे हैं। अगर पूरे गांव को बचाना है तो उसके लिए एक लड़की को देवदासी बनाना पड़ेगा। भूदेव ब्रह्मा का स्वरूप है। सबको भ्रमित कर देता है। ब्रह्मा के आदेश को न मानने की सजा भी थी। भला शूद्र कैसे दुस्साहस कर सकता था। कोई भी पिता अपनी बेटी को देवदासी नहीं देखना चाहता। ब्राह्मण का आदेश, गांव पर आने वाली विपत्ति का डर और अनर्थ की आशंका से सभी बेजुबान हो जाते थे। कोई अपनी बेटी को देवदासी बनाने से मना भी करता तो उसे दंडित किया जाता। मौत की सजा भी कोई जुर्म नहीं थी। एक पिता मरकर भी अपनी बेटी को देवदासी होने से नहीं बचा सकता था।

कौन लड़की देवदासी बनेगी इसका फैसला मन्दिर का पुजारी करता था। वह लड़की केवल शूद्र समाज से ही होती थी। चिन्हित लड़की का विवाह मन्दिर में विराजित पत्थर की मूर्ति के साथ कर दिया जाता था। शादी के बाद लड़की की ससुराल वह मन्दिर बनता था। वह मन्दिर में चली जाती। देवता कभी प्रसन्न होते तो कभी कुपित। चाहे देवता प्रसन्न हो या कुपित, दोनों अवस्थाओं में उस देवदासी को मन्दिर के पंडों की काम वासना का शिकार होना पड़ता था। देवता खुश भी होता तब भी पंडे शरीर नोचते थे और देवता कुपित होता तब भी।

देवदासी को संतान भी पैदा होती थी। पत्थर की मूर्ति ने देवदासियों से संतान भी पैदा की लेकिन पिता का नाम नहीं दिया। उनकी संतानों को हरिजन कहा जाता है। दक्षिण भारत में हजारों देवदासियां आज भी धर्म के नाम पर पंडों की रखैल बन रही हैं उनकी संताने हरिजन होने का गौरव पा रही हैं।

यह सब असहनीय था मेरे लिए। मैं नहीं चाहता था किसी पिता की कोई बेटी देवदासी बनकर पंडों की कामवासना का जीवन भर शिकार रहे। इसे कानून से रोका जा सकता था। भले ही कोई पिता ब्राह्मण के आदेश को मना नहीं कर सका। अनर्थ की आशंका से बेजुबान हो गया था लेकिन तुम्हारा यह पिता कमजोर नहीं था। मुझे अपने ज्ञान और कलम की ताकत पर भरोसा था,

मुझमें शक्ति थी, इस अनैतिक व्यभिचार को रोकने की।

मैंने तुम्हें सफेद वस्त्रों में सिर मुंडवाये हुए देखा है। बाल्य अवस्था में ही शादी हो जाती थी। वह लड़की ससुराल भी नहीं गई, पति को देखा भी नहीं, शादी का अर्थ क्या होता है, मालूम भी नहीं था। पति मर गया...... वह विधवा हो गई। पति कैसे मरा......, किस बिमारी से मरा......, इलाज करवाया भी कि नहीं, कोई पूछता भी नहीं था। कोई सवाल नहीं करता था। बस एक ही बात थी कि तुम विधवा हो, तुम अपशकुनी हो, सौन्दर्य का कोई अर्थ नहीं, सिर मुंडवा दिया और सफेद वस्त्र पहना दिए। बस तुम एक विधवा हो, यह विधि का विधान है, भाग्य का फल और कर्मों की मार मान कर झेलती रही हो। जिस मां ने तुम्हें जन्म दिया वह भी कोसती थी। पिता का प्यार भी नहीं...... वह भी ताने देता था। जब किसी के विवाह की कोई रस्म होती...... तो तुम नहीं जा सकती थी। भाई की शादी में चाहे तेल उतारना ही हो, यह काम एक सुहागिन ही कर सकती थी। हर एक खुशी का क्षण तुम्हें तीरों की चुभन देता था और तुम रोती थी, अपने भाग्य और किस्मत को कोसती थी। तुम रोती रही, कोई नहीं सुनता था। तुम्हें सफेद वस्त्र इसलिए पहनाए थे कि तुम पवित्रता का जीवन जीओ। तुमने जीना भी सीखा, जीवन में पवित्रता को बनाए रखने के लिए सजगता से चरित्र की पहरेदारी भी की, लेकिन तुम फिर भी कलंकित रही। समाज के तथाकथित चरित्रवान लोगों की कुदृष्टि का शिकार बनती रही। दिन के उजाले में जो नैतिक रहते हैं, धर्म की मर्यादाओं का बखान करते थे उन्होंने ही तुम्हें रात के अंधेरे में लूटा है। नैतिकता के मापदंडों को तार-तार किया है। चरित्रहीन होने का आरोप भी तुम्हारे माथे पर कालिख बनकर लिपटा रहा है। तुम्हारे साथ अनैतिकता का खेल-खेलने वाले नैतिक पुरुषों पर आज तक कोई उंगली नहीं उठी। पवित्रता तुम्हारा गहना था, प्रत्येक पुरुष तुम्हें पवित्र देखना चाहता था ताकि तुम्हारा इस्तेमाल कर सके। लेकिन अफसोस तो इस बात का है कि कोई महिला भी तुम्हारे दुःख को नहीं समझ सकी। उसने भी तुम्हें कुलटा कहा......, दुश्चरित्र कहा।....., अपशकुनी कहा....., शब्द कम पड़ सकते हैं परंतु तुम्हारे दर्द कम नहीं।

जिस व्यक्ति की पत्नी मर जाए वह कितनी भी शादी कर ले लेकिन पति के मरने पर तुम नहीं कर सकती थी। पत्नी की मृत्यु पर कोई पुरुष सिर मुंडवाकर सफेद वस्त्र पहनकर विधुर नहीं कहलाता क्योंकि वह पुरुष है। नैतिकता का उसका अपना मापदंड है। विधवा होने का दर्द केवल तुम समझती

हो। तड़पती रही हैं हजारों महिलाएं, इस दंश को झेलती रही हैं। किसी ने इस नरक से छुटकारा भी पाना चाहा तो केवल एक ही मार्ग था, स्वयं की हत्या का, आत्महत्या ही मुक्ति का इकलौता मार्ग था। मैंने तुम्हें असहाय अवस्था में देखा है। तुम्हें इस दशा में देखकर मेरी रूहें कांप उठती थीं। आंदोलित हो गया था मैं..... तुम्हारी मुक्ति के लिए। चाहे ईश्वर तुम्हारी रक्षा में न आया हो लेकिन मुझे कोई नहीं रोक सकता था।

पिता की संपत्ति में तुम्हारा हिस्सा नहीं था। पति की संपत्ति तुम्हारी नहीं थी। तो फिर तुम क्या थीं? केवल महिला...., नारी...., पत्नी...., मां...., बहन, रिश्ता कुछ भी अधिकार कोई नहीं। तुम केवल औरत थीं, केवल औरत! जिसको प्राकृतिक नियमों के तहत पैदा होना था, पैदा हुई केवल उपभोग के लिए। शब्दों के प्रपंच ने तुम्हें गुमराह किए रखा। तुमने राखियां भी बांधीं, कोई भाई तुम्हारी लाज बचाने नहीं आया।

तुमने पति की लंबी उम्र की कामना भी की, व्रत भी किये ताकि तुम्हारा पति जीवित रहे। किसी पति ने कोई यत्न नहीं किया कि पत्नी भी लंबी उम्र जिये। तुम पति की मृत्यु पर जिंदा जल कर मरी, सती बन गई, लेकिन कोई पति पत्नी के साथ जल कर नहीं मरा।

तुमने मां बनकर संतानों की परवरिश भी की। कोई भी संतान तुम्हें सुख न दे सकी। मां चाहे पति की चिता पर जल रही हो, चिल्ला-चिल्लाकर जीवित रहने के लिए तड़प रही हो, संताने मूक दर्शक बन गई। कोई बेटा अपनी मां को बचाने नहीं आया। मां विधवा रही, बहन विधवा हो गई, बेटी विधवा हो गई, बेटा, भाई, पिता सब रिश्ते खत्म हो गए। किसी ने तुम्हारी परवाह नहीं की। तुम अकेली थी इस वीरान में, पति जीवित रहा तो तुम भी जीवित थी, पति मर गया तो तुम भी मर गई।

लेकिन मैं एक मां का बेटा भी हूं, मैं भी बहन का भाई हूं और अपनी पत्नी का पति। मैंने अपनी शक्ति को समझा। मैं भारत का कानून मंत्री बना। मेरे द्वारा बनाया गया संविधान भला तुम्हें गुलाम कैसे रहने देता। मैं प्रयास में जुट गया।

मैं नेहरू, पटेल, राजेन्द्र प्रसाद व सभी को समझाने लगा पर ये ब्राह्मणवादी लोग मुझे नहीं समझ सके। जवाहर लाल नेहरू ने मेरी बात को माना भी था। मैंने हिंदू कोड बिल बनाया जो तुम्हारी मुक्ति का दस्तावेज था। तुम्हारे बराबरी के अधिकारों का शस्त्र था।

मैं पूरी तैयारी के साथ देश की लोकसभा में हिन्दू कोड बिल लेकर आया। देश का प्रधानमंत्री ब्राह्मण था, राष्ट्रपति ब्राह्मण था, गृहमंत्री तो शूद्र था लेकिन उसे क्षत्रिय होने का अभिमान था। क्या ब्राह्मण-क्षत्रिय क्या वैश्य-शूद्र ये सब अलग-अलग थे, लेकिन तुम्हारी मुक्ति के दस्तावेज के विरोध में सब एक हो गए। नेहरू जो मुझसे वादा करके गया था कि- वह साथ देगा.... वह भी मुकर गया, उन्हीं के साथ हो गया। मैं तुम्हें मुक्त करना चाह रहा था और उन्हें ब्राह्मण का वर्चस्व खत्म होता दिख रहा था। मैं अकेला था लेकिन दूसरी ओर सभी थे, वे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र सभी मेरे विरुद्ध हो गये। मैंने इस लड़ाई को बहादुरी से लड़ा। मैं न हार सकता था और न हि ज्ञान की दलीलों से मुझे कोई हरा सकता था। मैंने तुम्हारी मुक्ति के लिए दलील दी। मेरे जवाब के लिए किसी के पास कोई दलील नहीं थी। किसी के पास कोई जवाब नहीं था ये सब असहाय हो गए। कानून के रूप में संविधान तुम्हें पूरा संरक्षण देने के लिए तैयार था। मेरे द्वारा बनाया जाने वाला कानून तुम्हारे संरक्षण का मजबूत कवच था। सभी लोग तुम्हारे विरुद्ध खड़े हो गए। मैं अकेला योद्धा बनकर लड़ा, पर कानून न बन सका। देश के सांसदों का मत तुम्हारे विरुद्ध था। लोकसभा में हिंदू कोड बिल गिर गया। मैं एक कमजोर कानून मंत्री बनकर नहीं रह सकता था। उसी समय अपना त्यागपत्र लेकर प्रधानमंत्री के पास चल पड़ा। राजेन्द्र प्रसाद जो राष्ट्रपति हैं उन्होंने मुझे पद छोड़ने की धमकी दी। गृह मंत्री पटेल भी ऐसी ही धमकी दे रहे थे, इसलिए मैं विवश हो गया था, मुझे क्षमा करना ऐसा नेहरू ने कह कर क्षमा मांगी थी। मुझे कानून मंत्री बने रहने के लिए निवेदन भी करता रहा लेकिन मैं ऐसा नहीं कर सकता था।

मैं उस समय देश की लोकसभा में हिन्दू कोडबिल पर अपना व्यक्तव्य देना चाहता था लेकिन सभापति ने मुझे अपनी बात कहने का मौका ही नहीं दिया क्योंकि वे जानते हैं कि मैं उनकी तुम्हारे प्रति मानसिकता को सबके सामने रख दूंगा। वे प्रपंच तो तुम्हारे हितैषी होने का करते हैं लेकिन कार्य तुम्हारे विरुद्ध। प्रधानमंत्री कमजोर हो सकता है लेकिन कानून मंत्री के रूप में डॉ. आंबेडकर नहीं, और मैं चला आया, देश की लोकसभा में तुम्हारी मुक्ति का बीज बोकर। आज मेरे द्वारा तैयार किया गया हिंदू कोड बिल टुकड़े-टुकड़े करके पास हो चुका है। अब तुम कानूनी रूप से स्वतंत्र हो। पुरुषों के समान सत्ता और संपत्ति में बराबर की भागीदार भी हो। मैंने न केवल तुम्हें बराबरी का दर्जा दिया है बल्कि पुरुषों के एकाधिकार और वर्चस्व को समाप्त भी किया है। अब

तुम स्वतंत्र हो। मैं तुम्हें स्वतंत्रता देना चाहता था.... लेकिन एक ओर नई गुलामी तुमने ओढ़ ली है। तुम मुझमें भरोसा नहीं करती हो, तुम भूल चुकी हो तुम्हारा मुक्तिदाता कौन है? आज फिर तुम मेरे बताए मार्ग पर न जाकर ब्राह्मणवाद के दलदल में जाकर फंस रही हो।

मैंने तुम्हें ज्ञान को मुक्ति का मार्ग बता करके उस पर चलने के लिए कहा था। तुम नाम दान और ध्यान के मार्ग पर चल पड़ी हो। मैंने तुम्हें दाढ़ी वाले पाखण्डी पंडों से बचने के लिए कहा था, आज तुम उन्हीं की शरण में जाने लगी हो।

मैंने तुम्हें कहा था शिक्षा पाकर अपने परिवार और समाज की सुंदर परवरिश करनी है, पर तुमने ज्ञान को पाकर भी अज्ञानता को खत्म नहीं किया। ज्ञान का अर्थ प्रकाश होता है जिससे अज्ञानता का अंधकार खत्म हो जाता है। मुक्ति का मार्ग स्पष्ट नजर आता है, पर तुमने ये क्या किया? ज्ञान पाकर भी अंधकार में भटक रही हो।

बेटी समझने की कोशिश करो। मुझे ज्ञान मिला मैंने उसे खुले रूप में सबको बांटा। ज्ञान बंधकर नहीं रहता, ज्ञान की प्रकृति फैलने की है। ज्ञान प्रकाश है, अंधेरा नहीं रह सकता। ज्ञान पहचान बनाता है, किसी भी परिस्थिति को ठीक से समझने के लिए रास्ता देता है, स्वहित और अहित का बोध कराता है। जब कोई व्यक्ति ज्ञान से सुशोभित होता है तो वह उच्च प्राकाष्ठा को पाता है। मैंने तुम्हें समझाया था कि बीमारी का उपचार दवा से होता है। बीमारी के कारण को समझ लेने से इलाज संभव हो जाता है। अगर मैं ज्ञान की दहलीज से न गुजरता तो क्या तुम्हारे लिए यह सब कर पाता?

मुझसे पूर्व तो ये पाखण्डी लोग तुम्हारी परछाई से भी नफरत करते थे। तुम्हें नीच और कुल्टा कहते थे। तुलसीदास जैसे लोग तो तुम्हें ताड़न (पीटने) के अधिकारी कहते थे। तुम अज्ञानता में फंसी रहो इसलिए ज्ञान से दूर रखते थे। आज तुम्हें शिष्या के रूप में स्वीकार कर रहे हैं।

तुम उनसे नाम लेने जाती हो। वह परमात्मा का दूत तुम्हें नाम दान देकर कहता है नाम का सुमिरन करो, तुम नाम जपती रहो।

मुक्ति के लिए....., सुख के लिए......,
समृद्धि के लिए.... और संतानों के लिए....।

जब वह तुम्हें नाम देता है तब कहता है इसे किसी दूसरे व्यक्ति को बताना मत, नाम जपना। चोर, चोरी की चीज को छुपाता है, अपराधी, अपराध करके छुपाता है। अनैतिक व्यक्ति अनैतिक कर्म करके उसे छुपाता है, धोखा

देने वाला व्यक्ति धोखा देकर सत्य को छुपाता, ज्ञान और सच्चाई कभी नहीं छुपाई जाती। विद्वान लोगों ने ज्ञान को खोजा और खुले रूप में बांटा। ये सभी आविष्कार विज्ञान व ज्ञान के बल पर खोज किये गये हैं। दुनिया में जिसने भी ज्ञान खोजा, उसने उसे बांटा और पूरी दुनिया का कल्याण किया।

बुद्ध ने ज्ञान को खोजा, जनता के कल्याण के लिए सबको बांटा। 45 वर्षों तक निरंतर घूम-घूम कर ज्ञान बांटते रहे ताकि अनन्त लोगों का कल्याण हो सके। महान पुरुष महानता की ऊंचाईयों को छूते हैं ज्ञान के बल पर और उसी ज्ञान को अन्य लोगों के कल्याण के लिए बांटते हैं।

मैंने ज्ञान को अर्जित किया, देश-विदेश के विद्वानों से। यदि वे सब लोग ज्ञान बांटने का काम नहीं करते तो मैं भी क्या था?

मैंने भी ज्ञान प्राप्ति के बाद सबको ज्ञान मिले, सबको विकास का मार्ग मिले, सभी अपने दुःखों को खत्म करके सुखों को उपलबध हों, इसी का ख्याल करके स्कूलों की व्यवस्था की थी। ज्ञान प्राप्त लोगों को ज्ञान बांटने की जिम्मेदारी सौंपी थी और परिणाम देख भी रहा हूं। नई-नई खोजों ने मानव की तरक्की को गति दी है। फिर इन दाढ़ी वाले बाबाओं की दाढ़ी में कौन-सा सत्य छुपा है जिसको बताने से अनर्थ हो जाएगा। यह सच है कि यदि इसे बतायेंगे तो अनर्थ हो जाएगा। लेकिन किसका? जिसने तुम्हें छुपाने के लिए कहा है.. क्योंकि इसमें कुछ है ही नहीं। **नाम जपो.... क्या होने वाला है? क्या बरसात रुक सकती है.... सूर्य निकलना बंद हो सकता है..... रात के समय सूर्य का प्रकाश आ सकता है.... बिना खाए पेट भर सकता है।**

लेकिन बड़ी चालाकी के साथ इस झूठे सत्य का उपयोग किया जा रहा है। वे कहते हैं नाम जपने से मुक्ति मिलेगी..... कब? इस जन्म में नहीं.... अगले जन्म में।

यहां भूखे मरते रहो। मृत्यु के बाद स्वर्ग में सुंदर-सुंदर परियां आएंगी.... सोने की तश्तरी में चांदी के बिस्कुट लाएंगी.... एक बार खाओगे सदा के लिए भूख खत्म हो जाएगी। यहां प्यास से मरते रहो कोई बात नहीं, लेकिन स्वर्ग में सुंदर-सुंदर परियां आएंगी.... हीरे जवाहरात जड़े हुए स्वर्ण जग में अमृत भरकर लाएंगी..... जिसे एक बार पिओगे सदा के लिए प्यास समाप्त हो जाएगी। तुम्हारी सुंदरता की कोई बात नहीं। स्वर्ग की परियों की सुंदरता तुम्हारे पति का मोह भंग कर रही हैं। उनके द्वारा बजाई जाने वाली वीणा उन्हें मंत्र-मुग्ध कर रही हैं। जबकि तुम्हारी मधुर आवाज में भी उन्हें हाथी की चिंघाड़

सुनाई देती है।

यह सब एक खेल है अज्ञानता का। इस जीवन को सुखी बनाने का कोई यत्न नहीं। मृत्यु के बाद का पूरा एग्रीमेंट (समझौता) है। तुम धन देती हो स्वर्ग में सुख पाने के लिए.... वे बाबा उसी धन से धरती पर सुख भोग रहे हैं। तुम गर्मी में तड़फती हो.... और वो उसी धन से एयरकंडीशन का सुख ले रहे हैं।

तुम यहां भयभीत रहती हो..... वे बंदूके खरीद कर स्वयं के जीवन की सुरक्षा करते हैं। तुम पैदल चलती हो.... वे हवाई जहाज में उड़ते हैं। क्योंकि तुमने मान लिया परमात्मा तक उनकी पहुंच है, और यह भी सत्य है कि यह सारा खेल तुम्हें गुमराह करने का है।

यदि तुम यह मान बैठी हो कि नाम ही परम ज्ञान है। यही जीवन मुक्ति का परम सत्य है, तो इसे पूर्ण रूप से मानो। मैं जानता हूं ऐसा करने से तुम्हारी बर्बादी निश्चित है, फिर भी करके देखना। बच्चों को भी नाम दिलावा दो, स्कूल मत भेजना, वे भी नाम जपकर परम सत्य पा लेंगे? पति को नाम ले लेने दो, उसे काम पर मत भेजना। वह परम सत्य को पा लेगा? स्वर्ग का सुख तुम्हारा हो ही गया है.... फिर किस बात का इंतजार, यहां किसलिए दुख भोग रहे हो? जल्दी जाओ वर्ना स्वर्ग में भीड़ हो जाएगी और फिर ये लोग कौन सी बुकिंग एजेंसी बनाकर काम कर रहे हैं?

तुम्हारे माध्यम से मेरे द्वारा दिये गए ज्ञान को अज्ञानता से ढ़कने की कुचेष्टा की जा रही है। जो मैंने किया उसका परिणाम सामने है। जिसने भी मेरी बात का अनुशरण किया है वह परम सुख को उपलब्ध हुआ है।

जवाहर लाल नेहरू भले ही ब्राह्मण थे। उसने उस समय मेरी बात को नहीं माना, लेकिन केवल मेरा अनुशरण करके ही अपनी बेटी इंदिरा गांधी को देश का प्रधानमंत्री बना पाया। उस समय सभी लोगों ने मेरा विरोध किया था, मगर आज वे सच्चाई को समझ सके हैं और उनकी लड़कियां राजा बनकर राज कर रही हैं।

मैं आज फर्क देख पा रहा हूं मेरी बेटी ने मेरी बात को माना। मेरा अनुशरण किया। उत्तर प्रदेश की चार बार मुख्यमंत्री बनी। स्वयं ने सुख का अनुभव किया। सुख बांटा और धन्य हो गई समस्त नारी जाति मायावती के नेतृत्व को पाकर। जिसने मेरी बात पर भरोसा किया वह शासक बना। जिसने दाढ़ी वालों का नाम लिया वह दास बना। तुमने नाम दान लिया.... भंगीदास

हो गई। मैंने तुम्हें कलम दी थी मुक्ति की इबादत लिखने के लिए, तुम भंगीदास बनकर फिर झाड़ू पकड़े बैठी हो। इसलिए फर्क देखना.... भंगीदास बनाकर तुम्हारे हाथ में झाड़ू इसलिए दी है कि यहां गंदगी को साफ करो और मरने के बाद वहां भी। क्योंकि मेरी लायक संतानों ने स्वर्ग का लोभ छोड़ दिया है। फिर शूद्र के लिए स्वर्ग है ही नहीं। ऐसा ईश्वर के द्वारा लिखित ग्रंथ कहते हैं। ये ग्रंथ कहते हैं कि ज्ञान के धनी अज्ञानता में झाड़ू लगाते हैं और सुखी हो जाते हैं।

अभी मैं देख रहा हूं - मेरे द्वारा बोए गए ज्ञान के बीज अंकुरित होने लगे हैं। परमात्मा भी बेचैन हो गया है। अभी-अभी बृज के क्षेत्र में परमात्मा ने साक्षात हरि का रूप धारण किया है। वह साक्षात हरि है। बिना देखे बीमारी ठीक कर देता है। शराबी की शराब छुटा देता है। बेऔलादों को संतान का सुख देता है। मेरे द्वारा दिये गये ज्ञान को पाकर जो अपवित्र हो गए थे, उन्हें शुद्ध करने के लिए स्वयं साक्षात हरि आ गए हैं। दलितों का मुक्ति दाता बनकर मेरे ही अनुयायियों को शुद्ध कर रहा है।

लेकिन महिलाओं पर होने वाले जुल्म उसे नहीं दिखते। साक्षात हरि को दलितों पर होने वाले अत्याचार, महिलाओं और बच्चों के साथ होने वाला शोषण उसे नजर नहीं आता। पश्चिमी उत्तर-प्रदेश और थोड़ा-सा राजस्थान ही विश्व हरि का विश्व है। मुझे तुमने ज्ञान का प्राय समझा है इसीलिए तुमने मुझे बाबा साहब कहा। मेरे सामने तुम्हीं ने एक बाबा खड़ा कर दिया है भोला बनाकर। भोले तो हम थे ही, अज्ञानता ही भोलापन को जन्म देती है। यह साहब को भोला बनाने का भ्रम जाल है, फंस जाओगी। .....तो भोला की भोली बनोगी। फिर तुम नाचोगी.... ईश्वर के सामने। फिर तुम्हारे पैरों में घुंघरू बंधेंगे। फिर वैसा ही जीवन होगा जैसा मैंने पहले देवदासियों को देखा। पर मैं चाह करके भी तुम्हें मुक्त नहीं कर पाऊंगा....। क्योंकि मैंने सारी शक्तियां तुम्हें सौंप दी हैं.... संविधान रूपी विरासत की वसीयत में। तुम्हें अपनी रक्षा करनी है। ज्ञान को पाकर तुम्हें भोला की भोली नहीं, साहब बनना है। जैसा पिता होता है संतानों को वैसा ही बनने की प्रेरणा देता है। पर तुम भटक चुकी हो। देवताओं की दासता को स्वीकार कर रही हो। तुम्हारे हाथों में बंधे हुए बंधन, गले में बंधा काला धागा बता रहा है तुम गलत दिशा में जा रही हो। अभी तक तुमने क्या पाया, सोचो? और क्या पाओगी? सोचो! इसीलिए कहता हूं पढ़ो! सच्चे ज्ञान को पढ़ो! बिना जाने मुक्ति नहीं है और नहीं जानना अपराध।

भोला की भोली बनकर अपराध कर रही हो। आज तुम मेरे सामने पुष्प लिए खड़ी हो। मैं पहचान रहा हूं तुम मेरी संतान हो एक पिता अपनी बेटी को कैसे भूल सकता है भले ही बेटी भूल जाए।

तुम चाहे वर्ष में एक दो बार मुझे पुष्प अर्पित करने की रस्म अदायगी के रूप में मेरे सामने आती हो कोई फर्क नहीं पड़ता। तुम चाहे मुझे भूल जाओ। मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैंने सदा तुम्हारी बेहतरी की कामना की है। मैंने तुम्हारे लिए खुशियों के मार्ग को खोल के रखा है। तुम भले ही उस पर न चलो कोई बात नहीं।

लेकिन बेटी गलत दिशा में मत जाना.... यह मृत्यु का द्वार है। इस मार्ग पर तुम्हारे चलते ही मृत्यु होगी। एक बेटी की... एक मां की.... एक पत्नी की.... और इससे भी बढ़कर एक औरत की....। क्योंकि तुम्हारा अनुशरण और भी करेंगी और मेरा प्रयास असफल हो जाएगा। इसलिए कहता हूं समझ जाओ....। सही और गलत को पहचानों, मैं तुम्हारी मुक्ति की राह देख रहा हूं।

मैं प्रतिदिन जागता हूं। पहले भी नहीं सोया.... जागता रहा। आज भी जागता हूं.... केवल इसलिए कि कोई तुम्हारी आजादी को न छीन ले। एक बहादुर सैनिक बाप का बेटा हूं। बहादुरी से जिया हूं और बहादुरी से तुम्हारी रक्षा कर रहा हूं। याद रखना तुम सुखी इसलिए हो क्योंकि तुम मेरी संतान हो। जब तक तुम मुझे पिता के रूप में बाबा साहब के रूप में देखती रहोगी दुनिया की कोई शक्ति चाहे दैव्य हो या अदैव्य कोई तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकेगी और यदि तुमने किसी और को पिता कहा तो मैं तुम्हें नहीं बचा सकूंगा क्योंकि संतानों पर पिता का हक होता है। इसे जान लो..... इसीलिए दाढ़ी वाले बाबा, बाबा होकर भी पिता कहलवाते हैं। मेरा मार्ग सुख और समृद्धि का मार्ग है। **बंधन काटने का मार्ग है, दास्तां से मुक्ति का मार्ग है, ज्ञान का मार्ग है अत दीपो भव बुद्ध के सिद्धांत पर आधारित है।**

मैं जानता हूं दिशाहीन बच्चे को शब्दों के माध्यम से नहीं समझाया जा सकता। वह तो ठोकर खाकर ही समझ सकता है। फिर भी तुम्हें कहता हूं। मैंने तुम्हें बड़ी शक्ति और प्रयास के साथ भाग्य....... के चक्रव्यूह से बाहर निकाला है और तुम फिर उसी में धंस रही हो। मैंने जाना है, खोजा है और जो पाया है, सब कुछ तुम्हारी आजादी के लिए तुम्हें सौंप दिया है। पूरी विरासत का मैंने तुम्हें वारिस बनाया है। मैंने जीवन में सुख का कोई पल नहीं देखा। रमा ने भी मेरे साथ सिर्फ कष्ट ही कष्ट उठाए। चार-चार संतानों की मौत का

दर्द, पत्नी रमा के खोने का, बीमारियों से घेरे शरीर को ढ़ोने का दर्द सब कुछ गौण था। सब खोकर मैंने तुम्हें जीवन दिया है, तुम्हारी खुशियां ही मेरे लिए सुख का कारण है। इसलिए कहता हूं जाग जाओ, जाग जाओ।

मैं तुम्हें इस देश का शासक देखना चाहता हूं। एक महिला शिक्षित होती है तब वह दो परिवारों का भला करती है और यदि महिला अनपढ़ रहती है तो दो परिवार दुःख में रहते हैं। तुम पर पूरा दायित्व है। परिवार को बचाओगी तब ही समाज बच सकता है। इसलिए बुद्ध की शरण में आ जाओ। प्रज्ञा, शील, समाधि का मार्ग तुम्हारी सुरक्षा, सुख और समृद्धि का आधार बनेगा।

22 प्रतिज्ञाओं का सुरक्षा कवच कालांतर तक तुम्हारी सुरक्षा करेगा। मैं चाहता हूं तुम भी मेरी ही तरह बौद्ध बनकर जीओ। जीवन का अर्थ जानो और दासता की बेड़ियों को काट डालो।

मैं दुनियां से आंखों में आंसू लेकर विदा हुआ हूं पर तुम्हारे जीवन में खुशहाली को देखना ही मेरा लक्ष्य है। तुम्हारी मुक्ति ही देश की समृद्धि का आधार है। मुझे तुम पर भरोसा है, पूर्ण विश्वास है। मेरे जीवन को ठीक से पढ़ोगी और मेरी वारिस बनकर गौरव हासिल करोगी। जीवन में कभी भयभीत मत रहना। भाग्य और पुर्नजन्म के चक्र में मत पड़ना। पाखण्ड और कर्मकाण्ड से बचकर रहना। नाम जपने की बजाय ज्ञान को ठीक से पाना। सम्यक ज्ञान ही जीवन का सही मार्ग है। एक मां ही अपनी संतानों को सच्चा मार्ग दे सकती है। तुम्हारी समृद्धि में ही मुझे संतोष होगा। बुद्ध की असीम अनुकम्पा की तुम पात्र बनी रहो। ज्ञान के बल पर प्रज्ञा, शील, समाधि का मार्ग चुनो और देश की हुक्मरान बनो। यह मेरी मंगलकामना है।

भवतु सब्ब मगलं